शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती आशा साहू, शोधार्थी (शिक्षा), कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
व्याख्याता (शिक्षा), भिलाई महिला महाविद्यालय, भिलाई (छ.ग.)

सारांश –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सही दिशा की ओर उन्मुख करने में सहयोग देता है। संवेगात्मक बुद्धि मानव जीवन का प्रमुख पहलू है। छात्र–छात्राओं के लिये ये जरूरी है कि वे अपने संवेग पर नियंत्रण कर सके और उसे सही समय पर प्रस्तुत करने की क्षमता भी उनमें होनी चाहिए। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करने के लिए भिलाई एवं दुर्ग शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों के प्रतिदर्श का चयन किया गया। इनमें शासकीय विद्यालय के 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) तथा अशासकीय विद्यालय के 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) का चयन स्तरीकृत गैर अनुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु डॉ. शीतला प्रसाद द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी (2009) का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा ''टी'' मूल्य का उपयोग किया गया। एकत्रित आंकड़ों की गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करने के पश्चात् निष्कर्ष में यह पाया गया कि शासकीय व अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। लिंग के आधार पर शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। लिंग के आधार पर अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द – संवेगात्मक बुद्धि, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, विद्यार्थी।

प्रस्तावना –

संवेगात्मक बुद्धि का साधारण अर्थ है – स्वंय या दूसरों के भावों को पहचानने की क्षमता से है। संवेगात्मक बुद्धि मानव जीवन का प्रमुख पहलू है। छात्र–छात्राओं के लिये ये जरूरी है कि वे अपने संवेग पर नियंत्रण कर सके और उसे सही समय पर प्रस्तुत करने की क्षमता भी उनमें होनी चाहिए। उच्च

मानसिक विकास में संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। छात्र–छात्राओं की पढ़ाई पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। अगर छात्र–छात्राओं में मानसिक नियंत्रण न हो तो वे तनाव में आ जाते है। हीनता की भावना उनमें आ जाती है। अगर छात्र–छात्राऐं मानसिक रूप से मजबूत हो जाते है तो हीनता व तनाव के स्थान पर आत्म सुरक्षा व आत्म विश्वास की भावना आ जाती है। संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि के क्षेत्र में यह एक नया प्रत्यय है। इस प्रकार की बुद्धि का तात्पर्य उस दक्षता से है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने तथा दूसरों के संवेगों का प्रभावी ढ़ग से प्रबंधन करता है।

संवेगात्मक बुद्धि का आधार आत्मज्ञान होता है। इसमें व्यक्ति अपने संवेग से तो अवगत होता है साथ ही साथ इसमें वह दूसरों के संवेग को प्रबंधित भी करता है तथा इसमें आत्म–अभिप्रेरण भी सम्मलित होता है।

साल्वे तथा मायर्स (1990) संवेगात्मक बुद्धि एक योग्यता है, जिससे हम अपने स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों की भावनाओं एवं संवेगों का अनुवीक्षण करते है। इन सूचनाओं के आधार पर उनमें अंतर करते हैं और अपने कार्यों एवं चिंतन को निर्देशत करते है। बालकों का सही दिशा में विकास व उनकी उन्नति के लिए संवेगात्मक बुद्धि का आंकलन करना आवश्यक है। अतः शोधकर्ता ने विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने का निर्णय लिया।

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा शाधकर्ता ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

संबंधित शोध अध्ययन –

- **पार्कर एवं अन्य (2004)** ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध के विषय में अध्ययन किया। यह अध्ययन में हन्टविले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 667 विद्यार्थियों पर किया गया। अलबामा ने (EQ - i y v) को पूरा किया। साल के अंत में विद्यार्थियों के (EQ - i y v) आंकड़ो को विद्यार्थियों के सालभर के शैक्षिक अभिलेख से मिलाया गया। जब (EQ - i y v) चरों को विद्यार्थियों के भिन्न–भिन्न समूहों (बहुत सफल विद्यार्थी, सामान्य सफल विद्यार्थी तथा कम सफल विद्यार्थी) के शैक्षिक सफलता से तुलना की गई तब पाया गया कि शैक्षिक सफलता (उपलब्धि) संवेगात्मक बुद्धि से प्रभावित होती है। परिणाम यह प्राप्त हुआ कि शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि व सामाजिक वातावरण दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।
- **शबाना एवं रानी (2013)** ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी संवेगात्मक बुद्धि और उनके चार आयाम अंतः वैयक्तिक जागरूकता, अंतर वैयक्तिक जागरूकता, अंतः

वैयक्तिक प्रबंधन तथा अंतर वैयक्तिक प्रबंधन कि आधार पर अंतर ज्ञात किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में सामधारण अनियमित न्यादर्श विधि के द्वारा 160 विद्यार्थियों पर किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिये टी–मूल्य की गणना की गई। परिणाम द्वारा यह ज्ञात किया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि में अंतर वैयक्तिक जागरूकता के आधार पर 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

- **लॉरेन्स एवं टी. दीपा (2013)** ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध ज्ञात करना है। इसके लिये सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है। उपरकण के रूप में स्वनिर्मित संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली तथा स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इनके मध्य टी–मूल्य, प्रसरण विश्लेषण तथा सहसंबंध का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त, किये गये कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- **चामुंडेश्वरी (2013)** ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया । इस अध्ययन में राज्य माध्यमिक एवं केन्द्रीय बोर्ड के विद्यार्थियों के 321 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। संवेगात्मक बुद्धि के मापन कि लिये संवेगात्मक बुद्धि मापनी तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन कि लिये विद्यार्थियों के मई वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांको का उपयोग किया तथा प्राप्तांको का प्रसरण विश्लेशण तथा सहसंबंध निकाला गया। परिणाम यह दर्शाते है कि संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सहसंबंध पाया गया। केंद्रीय बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि राज्य बोर्ड विद्यार्थियों से अधिक थी। केंद्रीय बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि राज्य बोर्ड विद्यार्थियों से अधिक थी। परंतु मेट्रिकुलेशन बोर्ड विद्यालयों के विद्यार्थियों से कम थी। इसी तरह शैक्षिक उपलब्धि भी केन्द्रीय बोर्ड विद्यालयों के विद्यार्थियों की राज्य बोर्ड एवं मेट्रिकुलेशन से अधिक थी।

समस्या कथन –

''शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय को शोधकर्ता द्वारा समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02} उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{03} उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध कार्य शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के भिलाई एवं दुर्ग शहर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया। भिलाई एवं दुर्ग शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी जनसंख्या के अंतर्गत है।

न्यादर्श –

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में स्तरीकृत गैर अनुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्रा) का चयन किया गया। जिनमें

50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) शासकीय विद्यालय से एवं 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) अशासकीय विद्यालय से लिए गए।

उपकरण –

विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मापन करने के लिए . शीतला प्रसाद द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी (2009) का प्रयोग किया गया। इसमें संवेगात्मक बुद्धि मापनी के पाँच आयाम 1. स्वजागरूकता, 2. प्रेरणात्मक होना, 3. स्व–नियंत्रण, 4. स्वानुभमूति एवं 5. संबंध है तथा 40 कथन है। इस उपकरण की विश्वसनीयता तथा वैधता उच्च है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ –

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा ''टी'' मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया।

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- मूल्य	सार्थकता स्तर
शासकीय शाला के विद्यार्थी	50	108.65	27.55	0.55	0.01 स्तर पर असार्थक df = 98
शासकीय शाला के विद्यार्थी	50	105.08	22.99		
सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना स्वीकृत होती है।					

व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान क्रमश 108.65 तथा प्रमाणिक विचलन 27.55 प्राप्त हुआ। अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान क्रमशः 105.8 तथा प्रमाणिक विचलन 22.99 प्राप्त हुआ। तथा दोनों का ''टी'' मूल्य 0.55 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता स्तर की कोटि df =98 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर, ''टी'' का मान

0.55 प्राप्त हुआ जो कि तालिका के मान से छोटा है। इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{02} उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- मूल्य	सार्थकता स्तर
शासकीय विद्यालय के छात्र	25	100.448	24.869	2.16	0.01 स्तर पर सार्थक df = 48
शासकीय विद्यालय के छात्राएँ	25	116.856	27.667		
सार्थक अंतर है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।					

व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान क्रमश 100.448 तथा 116.856 तथा प्रमाणिक विचलन 24.869 व 27.667 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता स्तर की कोटि df =48 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर ''टी'' का मान 2.16 प्राप्त हुआ जो कि तालिका के मान से बड़ा है। इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत है।

H_{03} उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- मूल्य	सार्थकता स्तर
अशासकीय विद्यालय के छात्र	25	111.872	27.66	1.89	0.01 स्तर पर सार्थक df = 48
अशासकीय विद्यालय के छात्राएँ	25	99.736	14.76		
सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना स्वीकृत होती है।					

व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान क्रमशः 111.872 व 99.736 तथा प्रमाणिक विचलन 27.66 व 14.76 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता स्तर की कोटि क=98 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर ''टी'' का मान 1.89 प्राप्त हुआ जो कि तालिका के मान से छोटा है। इससे स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट है कि शाधार्थी की 3 परिकल्पनाओं में से 2 परिकल्पनायें स्वीकृत हुई तथ 1 परिकल्पना अस्वीकृत हुई है, जो निम्न है

- शासकीय व अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका कारण शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को समान शिक्षण देना हो सकता है।
- शासकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत है। इसका कारण हो सकता है कि छात्र की अपेक्षा छात्राओं में अधिक स्वजागरूकता तथा स्वप्रेरणा होना हो सकता है।
- अशासकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका कारण हो सकता है कि छात्र एवं छात्राओं को समान अवसर प्रदान करना हो सकता है।
-

संदर्भित ग्रंथ –

Chamundeshwari, S. (2013) Emotional intelligence and academic achievement among student at the higher secondary level. *International journal of academic research in Economics and Management* 2(4), 2226-3624.

Laurence, A.S.A. & Deepa, T. (2013). Emotional intelligence and academic achievement of high school students in kanyakumari dis, *International Journal of Physical and Social Sciences*, 3(2), 101-107

Parker, J.D.A., Creque, S. Barnhar, D.I., Harris, J.I., Makeski. S.A. Wood. L.M., Bond, B.J. & Hogan, M.J. (2004). Academic Achievement in high school, does emotional intelligence matter ? *personality and individual difference*, 37(1), 1321-1330

Shabana & Rani A. (2013). Academic achievement of higher secondary school students on the basis of emotional intelligence. *Indian journal of psychology and education*, 44(2), 136 - 141.

त्रिवेणी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2006*), रिसर्च मेथेडोलॉजी,* प्रकाशक कॉलेज बुक डिपो 83, ट्रिपोलिया बाजार, जयपुर 2.

रानी,ए (2009), उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्म बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, *मार्डन एजुकेशन रिसर्च इन इंडिया,* 4(3), 1–6.

.....